युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 50वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की पांचवी पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह

(दिनांक 12 सितम्बर से 18 सितम्बर, 2019 तक)

प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर, 11 सितम्बर। श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज की 50वीं एवं राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की पाचवीं पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत 'श्रीमद्भागवत महापुराण कथा ज्ञान-यज्ञ' का शुभारम्भ श् अखण्ड ज्योति की शोभा-यात्रा के साथ स्मृति सभागार में पहुंची। अखण्ड ज्योति के स्थापित होने एवं दोनो ब्रह्मलीन महाराज जी की चित्र पर पुष्पांजलि के साथ श्रीमद्भागवत कथा प्रारम्भ हुई। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज, माननीय मुख्यमंत्री, उ0प्र0, अयोध्या से पधारे अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी राघवाचार्य जी महाराज सहित साधु-संतो, सपरिवार यजमानगणों एवं भक्त-श्रद्धालुजन 'श्री श्रीमद्भागवत महापुराण' की शोभा-यात्रा में सम्मिलित हुये।

उद्घाटन अवसर पर उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने कहा कि श्री गोरक्षपीठ की समृद्ध परम्परा को नई दिशा देने वाले युगपुरूष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज भारतीय संस्कृति एवं संतो-योगियों की परम्परा के दिव्याकाश में चमकते हुए नक्षत्र हैं। उनका व्यक्तित्व कृतित्व तत्कालीन देश काल और परिस्थितियों की चुनौतियों का समाधान करते हुए देश, समाज तथा धर्म को समर्पित था। उनकी पूर्ण स्मृति में प्रति वर्ष सप्ताह भर धार्मिक आध्यात्मिक आयोजनों के साथ सम सामयिक विषयों पर सम्मेलन आयोजित कर हम प्रेरणा प्राप्त करते हैं। धर्म भारत का प्राण है और संस्कृति भारत की आत्मा है। भारतीय धर्म और संस्कृति का दर्शन भारतीय धर्म-ग्रन्थों में होता है। 'श्रीमद्भागवत कथा' भारतीय धर्म-संस्कृति के ही मूल तत्व का उद्घाटन करती है। जब देश विपरीत

परिस्थितियों में रहा है तथा संकर्मण काल से गुजरा है उस समय देश और समाज को एक करने का काम इन्ही कथाओं ने किया है। 'श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ' के आयोजन के पीछे हमारा यही उद्देश्य है कि भारतीय धर्म-संस्कृति की सुगन्ध घर-घर में पहुँचे।

उन्होंने कहा कि श्रीमद्भागवत कथा भी दुष्टों के पतन तथा धर्म की प्रतिष्ठा हेतु भगवान के अवतरण की कथा है। युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की पुण्यतिथि के अवसर पर प्रारम्भ यह श्रीमद्भागवत् कथा ज्ञान यज्ञ जीवन की सभी समस्याओं के निदान का मार्ग प्रशस्त करेगी। 'धर्म की पुर्नप्रतिष्ठा और अधर्म का नाश' भारतीय समाज का अभीष्ट रहा है और वह सदा बना रहेगा।

श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का शुभारम्भ करते हुये अयोध्या से पधारे प्रसिद्ध कथावाचक अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी राघवाचार्य जी महाराज ने युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि गुरू शिष्य की अनूठी परम्परा गोरक्षपीठ ने देखने को मिलती है। इस पीठ को पूरे देश के समाज के सजग प्रहरी, द्वारपाल एवं संरक्षणकर्ता के रूप में सम्पूर्ण सन्त समाज स्वीकार कर रहा है। भगवान् को प्राप्त करने के लिये मानव जन्म मिलता है। अतः जीवन जब तक है उसे मानवता की रक्षा में, भगवान् की सेवा में श्रीकृष्ण के कार्य में लगायें मोक्ष मिल जायेगा।

कथा व्यास ने गुरू वन्दना एवं संकीर्तन से कथा प्रारम्भ करते हुए कहा कि 'श्रीमद्भागवत कथा धर्म का सागर है' उसमें से यथासम्भव पात्र अपनी पात्रता के अनुसार ही तत्व ग्रहण करते हैं। वस्तुतः श्रीमद्भागवत् भगवान् श्रीकृष्ण का ही दूसरा रूप है, देखने में यह पुराण लगता है किन्तु सुनने में यह नित्य नूतन है। श्रीमद्भागवत् कथा यशस्वी जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है और पाप से मुक्ति के साथ मोक्ष तक पहुँचता है। यह कथा जीवन जीने की कला सिखाती है। अटूट निष्ठा और श्रद्धा से भक्त भगवान् तक इस कथा के माध्यम से पहुँच सकता है।

भगवान तो इतने दयालु है कि जो उन्हें ढूढ़ता रहता है एक दिन वह स्वंय उसे ढूढ़ने लगते है। भगवान का दर्शन सद्गुरू ही करा सकता है। कथा गुरू महिमा पर केन्द्रित होती है तथा भक्त गुरू महिमा का महात्म श्रवण करने लगते है।

श्रीमद्भागवत कथा में भक्ति-ज्ञान-वैराग और नारद ऋषि के संवाद का प्रवेश होता है। देवर्षि नारद की सनकादिक ऋषियों से भेंट होती है और नैमिषारण्य में श्रीमद् भागवतकथा प्रारम्भ हो जाती है। आज की कथा में भगवान कृष्ण का अपने धाम जाने, परीक्षित का जन्म, महाराजा के रूप में परीक्षित का राज्यारोहण, महाराणा परीक्षित को श्रृंगी ऋषि का श्राप, श्राप से मुक्ति हेतु श्रीमद्भागवत कथा के श्रवण का प्रसंग के साथ गोकर्ण एवं धुंधकारी के जन्म के कथा का आनन्द भक्त लेते रहें।

श्रीमद्भागवत कथा यज्ञ के यजमानों श्री महन्त रविन्द्रदास जी महाराज, श्री सीताराम जायसवाल, श्री जवाहरलाल कसौधन, श्री पुष्पदन्त जैन, श्री चन्द्र प्रकाश अग्रवाल, श्री अरूण कुमार अग्रवाल उर्फ लाला बाबू, श्री विकास जालान, श्री संतोष कुमार अग्रवाल उर्फ शशि जी, श्री महेश पोद्दार, श्री जितेन्द्र बहादुर चन्द, श्री महेन्द्र पाल सिंह, श्री ओम प्रकाश कर्मचन्दानी, श्रीमती उर्मिला सिंह, श्री रेवती रमणदास ग्रवाल, श्री अवधेश सिंह, श्री अजय कुमार सिंह, श्री प्रदीप जोशी, श्री मृत्युंजय सिंह, श्री चन्द बंसल ने सपरिवार व्यास पीठ का पूजन किया। मंच संचालन डॉ. श्रीभगवान सिंह ने किया।

कथा में हनुमानगढ़ी के श्री धर्मदास जी महाराज, दिगम्बर अखाड़ा के महन्त सुरेशदास जी महाराज, राममिलनदास, संतोषदास उर्फ सतुआ बाबाद, प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी महाराज, योगी मिथिलेशनाथ, सदर सांसद श्री रवि किशन, गौ सेवा आयोग के उपाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक अतुल सिंह, विधायक महेन्द्रपाल सिंह, विभ्राट चन्द्र कौशिक, आनन्द शाही, विजय शंकर यादव, भाजपा के डॉ. धर्मेन्द्र सिंह, जनार्दन तिवारी, राहुल श्रीवास्तव, धीरज सिंह हरीश, बृजेशमणि मिश्र, वरिष्ठ समाजसेवी श्री अरूणेश शाही, ई0 पी0के0मल्ल, रणजीत सिंह, डी0पी0शाही, पं0 रामानुज त्रिपाठी, अरविन्द चतुर्वेदी, डॉ. रंगनाथ मिश्र आदि लोग उपस्थित थे।

आज श्रीमद्भागवत कथा के प्रमुख सार :

1. दुनियां का समस्त ज्ञान एवं विज्ञान श्रीमद्भागवत गीता में निहित है।

2. भगवान वेदव्यास ने पाच लाख श्लोकों की रचना की।

3. 125 वर्ष की आयु पूर्णकर भगवान श्रीकृष्ण नीज धाम गये।

4. भगवान श्रीकृष्ण ने स्वंय भगवत्गीता में प्राण-प्रतिष्ठा की।

5. सभी यज्ञों से पवित्र एवं श्रेष्ठकर ज्ञान यज्ञ है।

6. मन को पवित्र करने का सबसे बड़ा साधन भगवान के कथा का श्रवण है।

7. कथा श्रवण से ही व्यक्ति भगवत प्रेमी बनता है।

8. वास्तविक सुख केवल भगवान के भक्ति में है।

9. अनुकूलता का अनुभव सुख तथा प्रतिकुलता का अनुभव दुःख है।

10. कलयुग में केवल भगवान का नाम लेने से व्यक्ति भवसागर पार हो जाता है।

दिनांक 12.09.2019 साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह में संगोष्ठी

साप्ताहिक श्रद्धाजलि समारोह के अन्तर्गत पूर्वाह्न 10.30 बजे से 'राष्ट्रीय पुनर्जागरण यज्ञ एवं सन्त समाज' विषय पर संगोष्ठी दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में सम्पन्न होगी। संगोष्ठी की अध्यक्षता माननीय मुख्यमंत्री गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज करेंगे, मुख्य अतिथि जबलपुर से पधारे जगद्गुरू स्वामी डॉ. श्यामदास जी महाराज तथा मुख्य वक्ता राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के प्रो0 सतीश चन्द्र मित्तल होंगे। संगोष्ठी में पूर्व कुलपति प्रो0 रामअचल सिंह जी का भी व्याख्यान होगा।